भाषा विज्ञान या भाषाशास्त्र

भाषा विज्ञान या भाषाशास्त्र को अनुशासनिक ज्ञान का प्रमुख क्षेत्र माना जाता है विविध भाषाओं के मध्य सह सम्बन्ध पाया जाता है। इसके साथ साथ अन्य विषयों एवं भाषाशास्त्र के मध्य एक अनुशासनिक सह सम्बन्ध पाया जाता है। शिक्षण विधियों में भी अनुशासनिक व्यवस्था पायी जाती है:- भाषाओं ज्ञान में छात्रों को चित्र के माध्यम से वर्णमाला सिखाई जाती है। हिन्दी अंग्रेजी एवं संस्कृत आदि भाषाओं को सिखाने में सहसम्बन्ध का व्यापक रूप से प्रयोग किया गया है हिन्दी भाषा में अनेक शब्द संस्कृत भाषा एवं अंग्रेजी भाषी शब्दों को मिलते हैं तथा अंग्रेजी, हिन्दी एवं संस्कृत में ध्वनि विज्ञान का अनुकरण किया जाता है।

भाषा विज्ञान या भाषाशास्त्र प्रत्येक भाषा का पृथक् होता है।

हिन्दी संस्कृत तथा अंग्रेजी के लिए पाठ्यक्रम तैयार करते समय अनुशासनिक ज्ञान का उपयोग किया जाता है।

अनुशासनिक ज्ञान क्षेत्र द्वारा प्रभावित किये जाने वाले प्रमुख विद्यालयी भाषायी विषय

Scanned with CamScanner

अंग्रेजी, हिन्दी एवं संस्कृत है। इनके अनुशासनिक क्षेत्र से सम्बन्ध को निम्न लिखित रूप मे स्पष्ट किया जा सकता है।

अंग्रेजी भाषा पाठ्यक्रम एवं भाषाशास्त्र के मध्य सम्बन्ध →

अंग्रेजी को वर्तमान समय में प्रमुख विद्यालयी विषय माना जाता है अंग्रेजी भाषा के पाठ्यक्रम का निर्धारण भारतीय संदर्भ में रखकर किया गया है। आज भी उच्च प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी में प्रस्तुती, कहानियों एवं कविताओं के मध्य एक अनुशासन एवं सामाजिक व्यवस्था का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। पाठ्यक्रम में भाषायी ज्ञान के साथ-साथ सामाजिक विकास एवं पर्यावरण संरक्षण की भावना का समावेश होता है। अंग्रेजी भाषा के पाठों में सत्यता एवं ईमानदारी को पढाया जाता है।

अंग्रेजी भाषा एवं अनुशासनिक क्षेत्र के उपक्षेत्र भाषाशास्त्र के मध्य सम्बन्ध को निम्न बिन्दुओ के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

हिन्दी भाषा के पाठ्यक्रम एवं भाषाशास्त्र के मध्य सम्बन्ध

भाषाशास्त्र के क्षेत्र का प्रमुख विषय हिन्दी को माना जाता है। विद्यालयी विषय में हिन्दी को अनिवार्य विषय के रूप में प्रस्तुत किया जाता है भाषायी पाठ्यक्रम के रूप में हिन्दी को त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत रखा गया है।

अतः अनुशासनिक ज्ञान का हिन्दी भाषा के पाठ्यक्रम के प्रमुख सम्बन्ध हैं हिन्दी भाषा के पाठ्यक्रम एवं अनुशासनिक ज्ञान के क्षेत्र के सम्बन्ध को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है।

1- विद्यालयी स्तर पर हिन्दी भाषा का पाठ्यक्रम मे प्रत्येक विषय वस्तु को उसके वास्तविक स्थान स्थान पर रखा जाता है: जैसे - ज्ञात एवं सरल विषय वस्तु को पहले रखा जाता है। इसके उपरान्त अज्ञात एवं कठिन विषय वस्तु को पाठ्यक्रम मे स्थान दिया जाता है।

(2) विद्यालयी स्तर पर पाठ्यक्रम में उन शिक्षण विधियों को समाहित किया जाता है जो कि अनुशासनिक रूप से संगठित हो; जैसे - प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में चित्र विधि का प्रयोग करके हिन्दी वर्ण माला का ज्ञान कराया जाता है जबकि माध्यमिक स्तर पर व्याख्या एवं शब्दार्थ विधि के माध्यम से शिक्षण किया जाता है। इस प्रकार पाठ्यक्रम की शिक्षण विधियों में भी अनुशासनिक व्यवस्था होती है।

(3) पाठ्यक्रम में उन अधिगम गतिविधियों को स्थान दिया जाता है जिनसे छात्र शारीरिक एवं मानसिक रूप से क्रिया-शील रह सकें।
जैसे- छात्रों को अनुकरण वाचन करने एवं आदेशी वाचन सुनने के पर्याप्त अवसर दिये जाते हैं। दोनों ही स्थिति में छात्र क्रियाशील रहते हैं।

Scanned with CamScanner

संस्कृत भाषा पाठ्यक्रम एवं भाषाशास्त्र के मध्य सम्बन्ध →

विद्यालयी विषयों में संस्कृत भाषा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। अतः संस्कृत भाषा के पाठ्यक्रम में भी अनुशासनिक ज्ञान क्षेत्रों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। दूसरे शब्दों में, सामाजिक विज्ञान, प्राकृतिक विज्ञान एवं भाषा ~~भाषा~~ शास्त्र का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव संस्कृत भाषा पाठ्यक्रम पर देखा जा सकता है।

संस्कृत भाषा पाठ्यक्रम पर सर्वाधिक प्रभाव भाषा शास्त्र का होता है। क्योंकि वह इससे सम्बन्धित है।

अतः संस्कृत भाषा पाठ्यक्रम एवं भाषा शास्त्र के सम्बन्ध को निम्न रूपों में स्पष्ट किया जा सकता है।

(1) संस्कृत भाषा के पाठ्यक्रम के अंतर्गत एक विशेष प्रकार की क्रमबद्धता देखी जा सकती है। जो अनुशासनिक ज्ञान के प्रभाव को प्रदर्शित करती है।

Scanned with CamScanner

जैसे - संस्कृत भाषा की गिनतियों का बच्चों को ज्ञान कराते समय यह ध्यान रखा जाता है कि प्राथमिक स्तर पर चित्रों का सहारा लिया जाय तथा उच्च प्राथमिक स्तर पर उनको अन्य माध्यमों से ज्ञान कराया जाय। यह क्रमबद्धता विषयगत अनुशासन को प्रदर्शित करती है।

(2) संस्कृत भाषा की शिक्षण विधियों में क्रमबद्धता का अनुकरण किया जाता है। इसमें सर्वप्रथम प्राथमिक स्तर पर खेल एवं कविता के माध्यम से अक्षर एवं गिनती का बोध कराया जाता है। इसके उपरान्त उच्च प्राथमिक स्तर पर शब्दार्थ एवं खण्डान्वय प्रणाली का उपयोग किया जाता है। यह भी अनुशासनिक पक्ष को प्रदर्शित करता है।

(3) संस्कृत भाषा में भी शिक्षण सिद्धान्तों का प्रयोग किया जाता है। इसमें उन गतिविधियों को स्थान दिया जाता है जिसमें छात्र शारीरिक एवं मानसिक रूप से क्रियाशील रहे।

दर्शन Philosophy

किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली का उस देश के दर्शन से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा अपना आधार दार्शनिक सिद्धान्तों को अपनाकर/बनाकर ही चलती है। शिक्षा के उद्देश्य पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियां, अनुशासन तथा गुरु-शिष्य सम्बन्ध इत सभी किसी न किसी प्रकार दार्शनिक सिद्धान्त से जुड़े रहते है। यदि देश ने आदर्शवाद को अपना दर्शन स्वीकारा तो उद्देश्यों, पाठ्यक्रमों एवं गुरु शिष्य सम्बन्धों पर इसी दार्शनिक विचारधारा तथा सिद्धान्तों का प्रभाव दिखायी देगा। यदि प्रकृतिवाद, प्रयोजन वाद इत्यादि को दर्शन स्वीकार किया गया तो शिक्षाप्रणाली उसी से प्रभावित होगी। कहने का तात्पर्य है कि दर्शन और शिक्षा आपस में सम्बन्धित है।

आज के युग में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है।

Scanned with CamScanner

जिसके विचार किसी भी सम्बन्ध में एक दूसरे से अलग ना हो। इसी प्रकार शिक्षा के बारे में उसकी कोई ना कोई धारणा अवश्य होगी अपने जीवन दर्शन के आधार पर ही उसका विचार आधारित होगा। क्योंकि कि प्रत्येक व्यक्ति के सोचने का ढंग अलग होता है। प्राय: ऐसा देखा गया है कि एक व्यक्ति का जीवन दर्शन भी दूसरे व्यक्ति के जीवन दर्शन से भिन्न होता है।

दर्शन का अर्थ- दर्शन शब्द दृश् धातु से बना जिसका अर्थ है — देखना अंग्रेजी में Philosophy कहते हैं जो Philos तथा Sophia से मिलकर बना है। जिसमें Philos का अर्थ है (Love) प्रेम तथा Sophiya का का ~~और~~ अर्थ है। (of wisdom) ज्ञान है, इस प्रकार से Philosophy का अर्थ हुआ ज्ञान से प्रेम अर्थात नवीन ज्ञान की खोज में रहना ही दर्शन है।

Scanned with CamScanner

दर्शन की परिभाषाएँ –

फिक्टे → "दर्शन ज्ञान का विज्ञान है"

काण्ट → "सनातन नियामक शक्तियों के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना ही दर्शन है"

काम्टे दर्शन विज्ञानों का विज्ञान है।

बर्ट्रेण्ड रसेल के मत →

अन्य अध्ययनों के समान दर्शन का मुख्य की प्राप्ति है।

"दर्शन उचित ढंग से अनवरत विचारने की एक कला है, जो मानव जीवन के सन्दर्भ में किसी तथ्य के निकट पहुँचने का प्रयास करती है।"

दर्शन का भारतीय सम्प्रत्यय →

प्राचीन भारत में किसी भी प्रकार के चिन्तन को दर्शन कहा जाता था, जैसे-जैसे ज्ञान के क्षेत्र में विकास हुआ वैसे-वैसे हमने उसे भिन्न-भिन्न अनुशासनों में

विभाजित करना प्रारम्भ किया जैसे - मानव शास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र और चिकित्साशास्त्र आदि।

ज्ञान की उस शाखा को जिसमें ब्रह्माण्ड के अंतिम सत्य (Ultimate Reality) की खोज की जाती है उसे हमने दर्शन की संज्ञा दी। उपनिषद काल में दर्शन को इसी रूप में स्वीकार किया जाता था तब दर्शन की परिभाषा थी -

जिससे देखा जाय अर्थात् सत्य के दर्शन किये जाएँ वह दर्शन है।

(दृश्यते अनेन इति दर्शनम् - उपनिषद्)

अंतिम सत्य की खोज में हमे ब्रह्माण्ड के स्वरूप एवं इसके कर्ता तथा उपादान कारण पर सरवस विचार करना पड़ा। दार्शनिको ने सबसे अधिक विचार किया मनुष्य के स्वंय के वास्तविक स्वरूप पर और उस संदर्भ में आत्मा परमात्मा, जीव - जगत, ज्ञान अज्ञान प्राप्त करने के साधन और मनुष्य के करणीय तथा अकरणीय कर्मो पर खूब विचार हुआ। भागे चलकर यही सब दर्शन शास्त्र की विषय सामग्री बना

दर्शन का पाश्चात्य सम्प्रत्यय →

पाश्चात्य जगत में दर्शन का सर्वप्रथम विकास यूनान (ग्रीक) देश में हुआ। प्रारम्भ मे तो वहा भी दर्शन का क्षेत्र बड़ा व्यापक था। परन्तु जैसे जैसे ज्ञान के क्षेत्र में विकास हुआ दर्शन एक स्वतन्त्र अनुशासन के रूप में सीमित होता चला गया। दर्शन के लिए अंग्रेजी मे Philosophy शब्द का प्रयोग होता है। जो दो ग्रीक शब्दो Philos + Sophia से मिलकर बना है। Philos का अर्थ है प्रेम और Sophia का अर्थ है। ज्ञान इसलिए Philosophy का अर्थ है। ज्ञान से प्रेम। यह दर्शन का विस्तृत अर्थ है। यूनानी (ग्रीक) दार्शनिक प्लेटो दर्शन को इसी अर्थ मे स्वीकार करते थे। उनके शब्दो में वह व्यक्ति जो सभी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखता है। और सीखने के लिए सदैव उत्सुक रहता है। और कभी भी संतोष करके रुकता नही है वही दार्शनिक है।

Scanned with CamScanner

पदार्थों के सनातन स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना ही दर्शन है - Plato

प्लेटो के शिष्य अरस्तु प्रत्यय के साथ-साथ व्यवहारिकता पर भी बल देते थे। उन्होंने प्लेटो द्वारा प्रस्तुत दर्शन की परिभाषा को थोड़े अन्तर के साथ प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार-
"दर्शन एक ऐसा विज्ञान है जो परम तत्व के यथार्थ स्वरूप की जाँच करता है।"

काण्ट ने दर्शन को केवल ज्ञानशास्त्र कहा उनके अनुसार

"दर्शन बोध क्रिया का विज्ञान और उसकी आलोचना है"।

दर्शन मे हम अपने सामान्य विचारों की संदिग्धता और भ्रामकता की परख करते हैं, उन सब पर विचार एवं अनुसंधान करते है। जो हमारे अंतिम प्रश्नो के उत्तर प्राप्त करने मे भ्रम पैदा करते है। और अन्त में अपने अंतिम प्रश्नो के आलोचनात्मक उत्तर प्राप्त करते है। Bertrand Russel